तुंजूर! तुंजूर! तुंजूर!

फिलिस्तीनी लोककथा

पुनर्कथन : मार्गरेट मक्डोनल्ड

तुंजूर! तुंजूर! तुंजूर!

फिलिस्तीनी लोककथा

पुनर्कथन : मार्गरेट मक्डोनल्ड

बहुत पुरानी बात है. एक औरत थी
जिसका कोई बच्चा नहीं था.

उसने इश्वर से प्रार्थना
की, "कृपा मुझे एक
बच्चा दो, चाहें वो एक
खाना पकाने की देगची
ही क्यों न हो!"

फिर उसके एक बच्ची हुई!
बच्ची एक छोटी देगची थी!

तुरंत वो छोटी देगची इधर-उधर फुदकने लगी
और ऊपर-नीचे कूदने लगी.
"माँ! माँ! माँ!
मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूं!
मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूं!"
"अरे बाप रे!" उस औरत ने कहा.
"मेरी बच्ची एक छोटी देगची है,
पर वो मुझसे बहुत प्यार करती है."
हर रोज़ जब माँ काम करती
तो छोटी देगची इधर से उधर डोलती थी
और दीवारों से जाकर टकराती थी.
वो हमेशा यह आवाज़ करती थी :
तुंजूर! तुंजूर! तुंजूर!

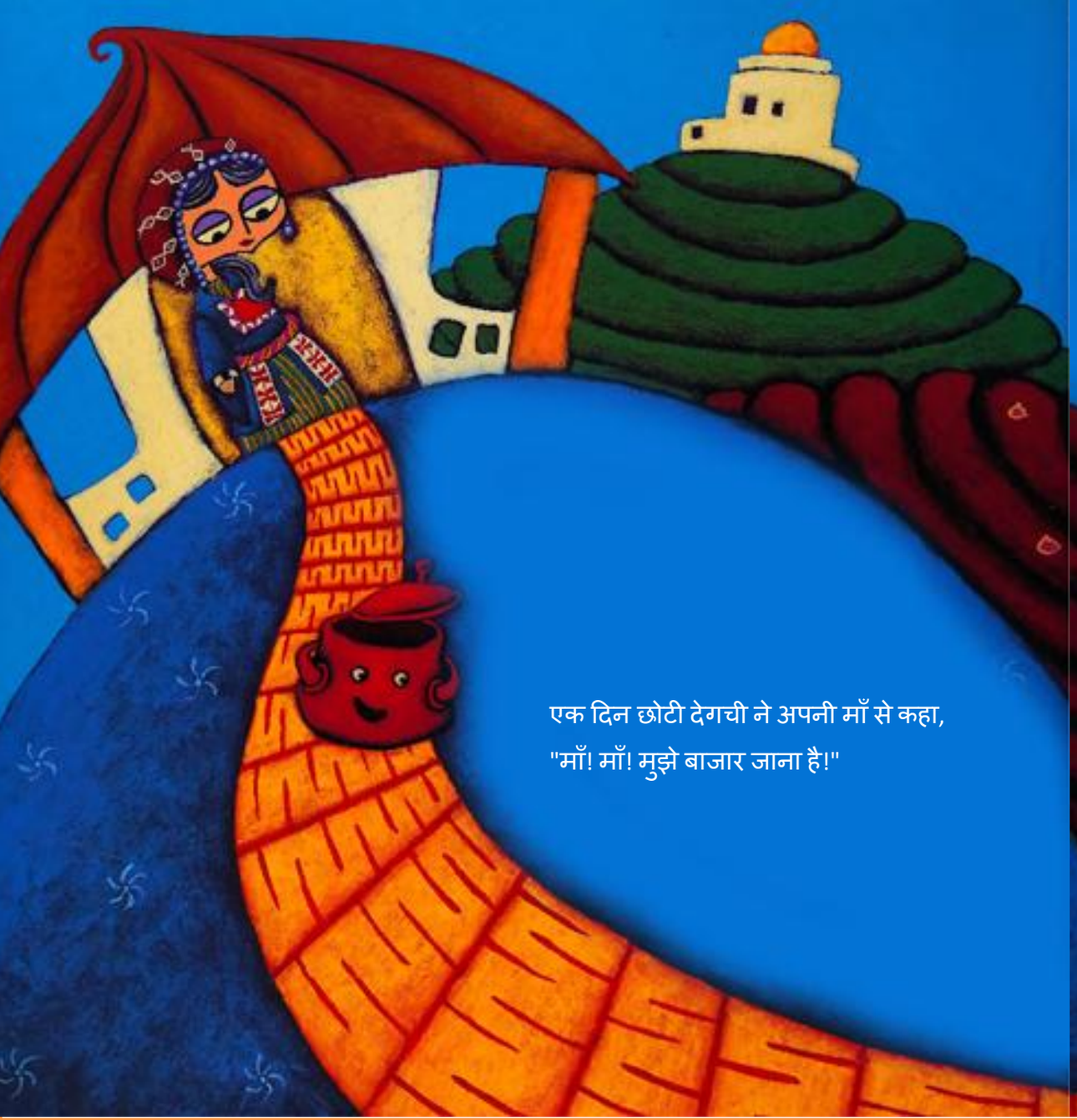

एक दिन छोटी देगची ने अपनी माँ से कहा,
"माँ! माँ! मुझे बाजार जाना है!"

"नहीं, छोटी देगची," माँ ने कहा, "तुम अकेले बाज़ार नहीं जा सकती हो.
तुम अभी बहुत छोटी हो, और तुम्हें सही और गलत का अंदाज़ नहीं है."
"पर मुझे सही व्यवहार आता है!
माँ! मुझे जाने दो! माँ! मुझे जाने दो! "
अंत में माँ ने छोटी देगची को, बाज़ार जाने की इज़ाज़त दी.
"किसी दिन तो तुम्हें अकेले बाहर जाना ही होगा.
इसलिए तुम्हें बाहर जाने देना ही ठीक होगा."
तुंजूर! तुंजूर! तुंजूर!
फिर छोटी देगची एक सड़क से नीचे लुढ़की और फिर दूसरी पर चढ़ी.....
फिर वो एक रईस व्यापारी की दुकान के सामने पहुंची.

"कितनी सुन्दर छोटी देगची है!" उस अमीर व्यापारी ने कहा.
"मैं इस छोटी देगची को घर ले जाकर अपनी पत्नी को दूंगा.
मैं उससे इस देगची को शहद से भरने को कहूंगा!"
"बहुत अच्छा!" छोटी देगची ने कहा, "मुझे शहद बहुत पसंद है!"

अमीर व्यापारी की बीबी छोटी देगची को देखकर
बहुत खुश हुई.
"आज रात को हम शहद खाएंगे!"
"नहीं वो लोग नहीं खाएंगे," छोटी देगची ने सोचा.
"वो शहद मैं अपने लिए रखूंगी."
और फिर छोटी देगची ने अपने ढक्कन को
कसकर बंद किया.
पत्नी ने ढक्कन खोलने की बहुत कोशिश की
व्यापारी ने भी ढक्कन खोलने की कोशिश की
पर उनसे छोटी देगची का ढक्कन नहीं खुला.
"माफ़ करना! मैं जो छोटी देगची लाया था,
वो किसी काम की नहीं निकली!"
और फिर व्यापारी ने छोटी देगची को अपनी
खिड़की के बाहर फेंक दिया.

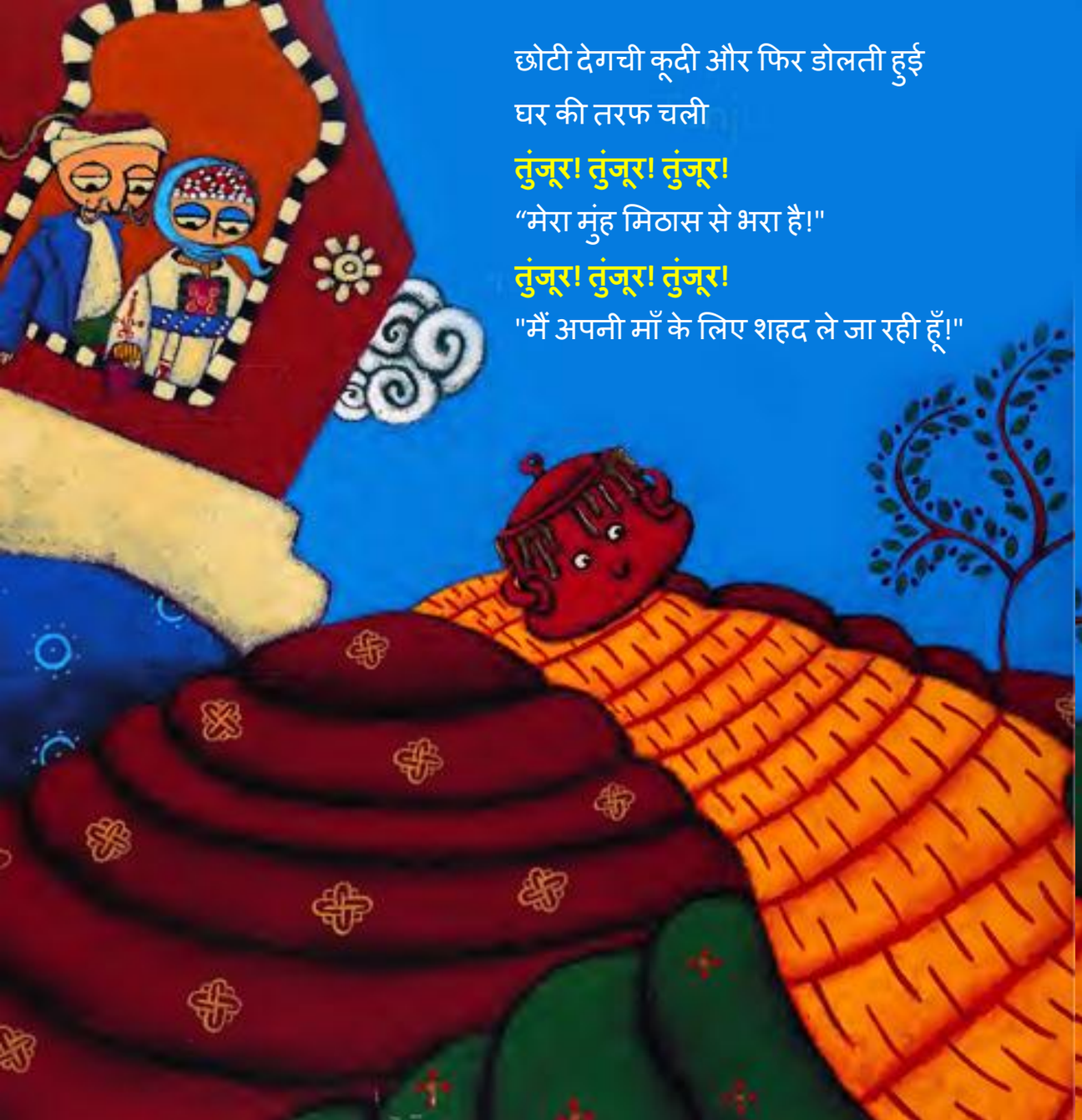

छोटी देगची कूदी और फिर डोलती हुई
घर की तरफ चली
तुंजूर! तुंजूर! तुंजूर!
“मेरा मुंह मिठास से भरा है!"
तुंजूर! तुंजूर! तुंजूर!
"मैं अपनी माँ के लिए शहद ले जा रही हूँ!"

"माँ! माँ! मुझे उठाओ!
माँ! माँ! मेरा ढक्कन खोलो!"
"अरे छोटी देगची!
तू मेरे लिए शहद लेकर आई है!
शायद शहद वाले ने यह भेंट भेजी होगी.
उसका बहुत- बहुत शुक्रिया."
छोटी देगची ने कुछ नहीं कहा.

अगले दिन....

"माँ! माँ! माँ! मुझे बाजार जाना है!"

"छोटी देगची, मुझे नहीं पता कि

क्या तुम्हें सही और गलत का अंदाज़ है?"

"पर मुझे सही व्यवहार तो आता है!

माँ! मुझे जाने दो! माँ! मुझे जाने दो!"

माँ ने दरवाज़ा खोल दिया

और फिर छोटी देगची बाहर लुढ़कती हुई गई.

तुंजूर! तुंजूर! तुंजूर!

वो बाजार से होते हुए,

सीधे राजा के महल में पहुंची.

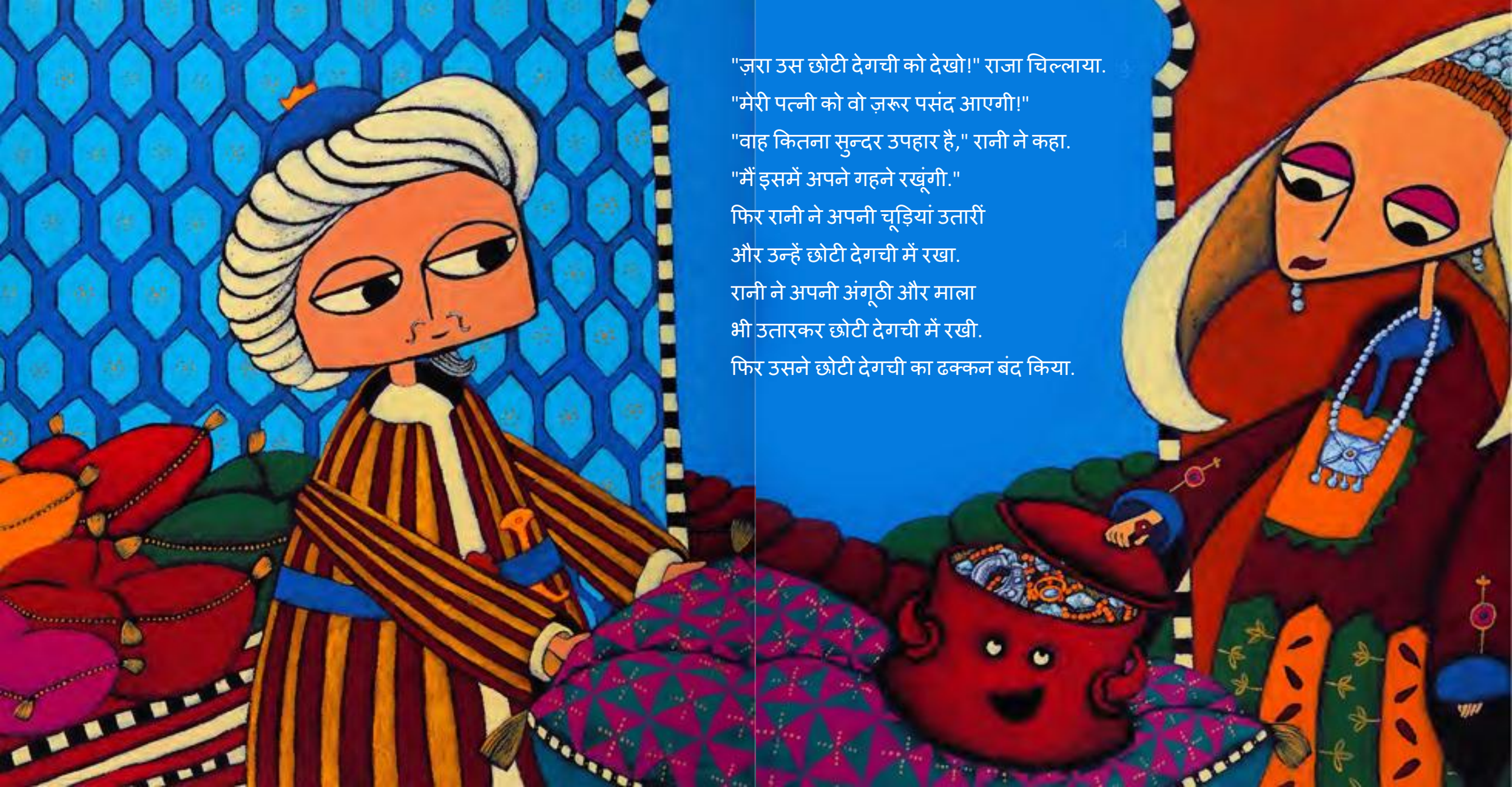

"ज़रा उस छोटी देगची को देखो!" राजा चिल्लाया.
"मेरी पत्नी को वो ज़रूर पसंद आएगी!"
"वाह कितना सुन्दर उपहार है," रानी ने कहा.
"मैं इसमें अपने गहने रखूंगी."
फिर रानी ने अपनी चूड़ियां उतारीं
और उन्हें छोटी देगची में रखा.
रानी ने अपनी अंगूठी और माला
भी उतारकर छोटी देगची में रखी.
फिर उसने छोटी देगची का ढक्कन बंद किया.

उस शाम को रानी ने गहने निकालने के लिए
छोटी देगची के ढक्कन को खोलने की कोशिश की.
रानी ने बहुत कोशिश की लेकिन
छोटी देगची का ढक्कन खुला ही नहीं.
रानी ने ढक्कन खींचा.
रानी ने ढक्कन को धक्का दिया.
"पतिदेव, क्या आप इस ढक्कन को खोल सकते हैं?"
राजा ने भी ढक्कन खींचा.
राजा ने भी ढक्कन को धक्का दिया.
लेकिन ढक्कन टस-से-मस नहीं हुआ.
"मुझे माफ़ करना कि मैं इस छोटी देगची को घर लाया.
लेकिन अब मैं उसे एक मिनट के लिए भी
घर में नहीं रखूंगा!"
यह कहकर राजा ने छोटी देगची को
खिड़की के बाहर फेंक दिया.

"ज़रा रुको! मेरे सब गहने
उस छोटी देगची में हैं!
उस देगची को रोको!"
लेकिन छोटी देगची
लुढ़कते हुए घर की ओर चल दी.

तुंजूर! तुंजूर! तुंजूर!
"मेरा मुंह पूरी तरह गहनों से भरा है!"
तुंजूर! तुंजूर! तुंजूर!
"राजा और रानी एकदम बेवकूफ हैं!"
"माँ! माँ! मुझे उठाओ!
माँ! माँ! मेरा ढक्कन खोलो!"

माँ ने छोटी देगची को उठाया.
फिर माँ ने उसका ढक्कन खोला.
"देखो छोटी देगची!
तुम्हें वो गहने किसी ने भी दिए नहीं होंगे.
तुम ऐसी चीज़ें घर ला रही हो,
जो तुम्हारी नहीं हैं!
कल हम इन चीज़ों को
उनके मालिकों को वापिस करेंगे!"
उस रात छोटी देगची जब पलंग पर लेटी
तो वो बेचारी बहुत दुखी थी.

अगले दिन सुबह छोटी देगची माँ से पहले उठी.

तुंजूर! तुंजूर! तुंजूर!

वो लुढ़कती हुए सीधे बाजार पहुंची.

"देखती हूँ, आज मुझे क्या अच्छी चीज़ मिलती है!"

उसे ज़्यादा देर इंतज़ार नहीं करना पड़ा.

तभी वहां वो रईस व्यापारी आया.

"यही वो छोटी देगची है जिसने मेरा शहद चुराया था!

मैं इस छोटी देगची को सीधे राजा के पास लेकर जाऊँगा.

हम यहाँ पर ऐसी छोटी देगचियों को नहीं रख सकते

जो दूसरों की चीज़ें चुराती हों!"

छोटी देगची को देखते ही राजा एकदम खड़ा हो गया.
"रानी, क्या यह वो छोटी देगची नहीं है
जो तुम्हारे गहनों को लेकर भागी थी?"
"हाँ, यह वही छोटी देगची है!"
"इसे सही इनाम मिलना चाहिए," राजा ने कहा.
"इसे बकरियों के बाड़े में ले जाओ, और इसमें वो भरो
जो इस छोटी देगची के लायक हो."
छोटी देगची बहुत खुश हुई.
"लगता है मुझे कोई इनाम मिलने वाला है!“
छोटी देगची ने सोचा.

लेकिन..... छपाक!

छोटी देगची में बकरी की लेंडी जाकर गिरीं!

छपाक! छपाक! छपाक!

जल्द ही छोटी देगची बकरी के मैले से भर गई!

फिर वो लुढ़कती हुई घर गई.

तुंजूर! तुंजूर! तुंजूर!

"मुझे अपनी माँ चाहिए, माँ चाहिए!"

तुंजूर! तुंजूर! तुंजूर!

"मेरा मुंह मैले से भरा है!"

"माँ! माँ! मुझे उठाओ!
माँ! माँ! मेरा ढक्कन खोलो!"
"बाप रे! छोटी देगची! तुम्हारे अंदर से बहुत बदबू आ रही है!
लगता है तुम चोरी करते हुए पकड़ी गईं!
छोटी देगची! मुझे उम्मीद है तुमने अब सही सबक सीखा होगा.
तुम वो चीज़ें नहीं ले सकती हो, जो तुम्हारी नहीं हैं."
उसके बाद छोटी देगची बहुत समय तक अकेली घर से बाहर नहीं निकली.
जब वो थोड़ी बड़ी हुई
तब उसे सही और गलत के बीच का फर्क समझ में आया.
उसके बाद ही छोटी देगची घर के बाहर गई.

समाप्त